eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

दीप यज्ञ का क्राँति दर्शन एवं इसकी युगपरिवर्तनकारी संभावनाएं

सुखनन्दन सिंह [1*], दीपक कुमार [2]

[1] प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

*CORRESPONDENCE
Address Department of Journalism And Mass Communication, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, India.
Email sukhnandan.singh@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Singh and Kumar.
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

सारांश: भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे वैदिक संस्कृति का मेरुदंड कहा गया है। यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक गहन चिंतन, दर्शन और साधना की विधि है। पारंपरिक यज्ञों की जटिलताओं को देखते हुए, युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने दीप यज्ञ की अवधारणा प्रस्तुत की, जो सरल और सुलभ है। दीप यज्ञ कम समय, स्थान और धन की आवश्यकता रखता है, और समाज के सभी वर्गों को शामिल करने में सक्षम है। इसका उद्देश्य समाज में नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक सुधार करना है। दीपक और अगरबत्ती के माध्यम से यह यज्ञ एक गहरे आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का प्रतीक है। इसके माध्यम से व्यक्ति, परिवार और समाज का नव निर्माण संभव है, जो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

कूट शब्द: दीप यज्ञ, अग्नि की विशेषताएं, लोक शिक्षण

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में यज्ञ का विशेष महत्व है। यह वैदिक संस्कृति का मेरुदंड है और इसे सृष्टि की धुरी माना गया है। वेद, धर्मशास्त्र और गीता जैसे ग्रंथों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। यज्ञ केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक गहन चिंतन, दर्शन और साधना की विधि है। पारंपरिक यज्ञों की सीमाओं को देखते हुए, युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने दीप यज्ञ की अवधारणा प्रस्तुत की। दीप यज्ञ एक सरल और सुलभ विधि है, जो कम समय, स्थान और धन की आवश्यकता रखता है। इसका उद्देश्य समाज में नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक सुधार करना है।

भारतीय संस्कृति में यज्ञ

भारतीय संस्कृति में यज्ञ की विशेष भूमिका रही है, वैदिक संस्कृति का यह मेरुदण्ड है। यज्ञ को भारतीय संस्कृति के पिता की संज्ञा मिली है। इसे सृष्टि की धूरी कहा गया है। वेद, धर्म शास्त्र, गीता आदि ग्रंथ इसकी महिमा गान से भरे हुए हैं। वास्तव में यज्ञ एक चिंतन, एक दर्शन, एक साधना पद्धति है। [1]

आश्चर्य नहीं कि गायत्री को जहाँ भारतीय संस्कृति की माता कहा गया, यज्ञ को पिता। भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित का-लजयी स्वरुप के अंदर जो सार्वभौम जीवन मूल्यों का शाश्वत प्रवाह रहा है, इसका मूल कारण भारतभूमि की यज्ञमय संस्कृति ही रही है। वस्तुतः यज्ञ देवसंस्कृति का आधार रहा है। परमार्थ, त्याग, बलिदान, सद्भाव – इन सभी का संयुक्त क्रियान्वयन यज्ञ कहा जाता है। पदार्थ यज्ञ-अग्नहोत्र इन्हीं प्रवृत्तियों-परिपाटियों को पुष्ट बनाने के लिए व्यायाम साधना के प्रयोग के रुप में किए जाते रहे हैं। [2]

भारत में यज्ञ को व्यापक अर्थों में उपयोग किया जाता रहा है। उच्च आदर्शों को जीवन में प्रयुक्त करने के लिए किए गए संकल्पवद्ध प्रयासों को यज्ञ कहा जाता रहा है। ज्ञान यज्ञ, भूदान यज्ञ, नेत्रदान यज्ञ आदि शब्दों के भाव सर्वविदित हैं। इनमें कहीं अग्निहोत्र नहीं होता, फिर भी ये यज्ञ कहे जाते हैं। इसी तरह जप यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ जैसे शब्दों का उपयोग होता रहा है। इसी पृष्ठभूमि में दीपयज्ञ के महत्व और भूमिका को समझा जा सकता है।

दीपयज्ञ की भूमिका

यज्ञीय जीवन के मूल भावों को समाहित करता दीप यज्ञ, पारम्परिक यज्ञ का समयानुकूल एवं युगानुकूल अभिनव संस्करण है, जिसे युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने सूक्ष्मीकरण साधना के उपरान्त मूर्त रुप दिया। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र सहित पूरे विश्व एवं मानवता को युग निर्माण की विचारधारा से स्नात करने के लिए यह एक युगानुकूल प्रयोग था, समय की आवश्यकता थी। आचार्यजी के शब्दों में, दीपक सर्वसम्मत दिव्यता का प्रतीक है, उसी को केंद्र मानकर यज्ञीय वातावरण बनाकर जनमानस को संस्कारित करने का यह ऐसा सफल प्रयोग है, जो हर दृष्टि से अद्भुत और विवेकसम्मत कहा जा सकता है। [3] वास्तव में पारम्परिक यज्ञों की सीमा को देखते हुए ही दीप यज्ञों की श्रृंखला का शुभारम्भ किया गया था।

पारम्परिक यज्ञों की सीमाएं तथा दीप यज्ञ

पारम्परिक यज्ञ की व्यापक स्वीकृति होने के वावजूद इनकी अपनी सीमाएं रही हैं। ये अधिक जगह घेरते हैं, अधिक समय लेते हैं, इनमें खर्च भी अधिक होता है, इनकी प्रक्रिया व मंत्रोचार आदि थोड़े जटिल होते हैं, हर कोई इन्हें सहजता से नहीं अपना सकता। इसके साथ ये समाज के सभी वर्गों के बीच सहज रुप में स्वीकार्य नहीं हो पाते। आचार्यजी के शब्दों में, परम्परागत यज्ञ अनुष्ठान इतने जटिल और समय साध्य बना दिए गए हैं कि वे जनस्तर पर प्रयुक्त हो ही नहीं पाते। विधि-निषेध, पुरोहितों की लम्बी दान दक्षिणा, विवेक सम्मत प्रतिपादनों का अभाव आदि जन साधारण को उनसे दूर रखते हैं। पुरोहितों और श्रद्धालु, दोनों पक्षों की अपनी-अपनी मजबूरियाँ हैं। कराने वाले न तो कृत्यों की उपयोगिता समझा पा रहे हैं और न अपनी विशिष्टता का प्रमाण दे पा रहे हैं। इसी कारण परम्परावादी लकीर पीटने के अलावा कुछ उल्लेखनीय हो नहीं पा रहा है। जिनके पास समय और धन का अभाव नहीं है, वे भी धर्म कृत्यों के प्रति अपना उत्साह प्रकट नहीं कर पा रहे हैं। [4]

आचार्यजी के अनुसार, इन सब कठिनाइयों, असमंजसों का समाधान दीप-यज्ञों में किया गया है। न अधिक दौड़ धूप, न अधिक सरंजाम और न अधिक स्थान तथा समय की आवश्यकता। पौरिहित्य इतना सरल कि मिलजुलकर पूरा कर लिया जए। कम से कम समय और खर्च में परस्पर सहयोग के आधार पर दिव्यता की सघन अनुभूति होती है। [5]

दीप यज्ञ में घर-परिवार छोटे स्तर से लेकर नगर एवं क्षेत्रीय स्तर तक विशाल रुप में किए जा सकने की सुविधा है। लोगों में उत्साह हो, तो हर याजक अपने साथ दीपक एक अगबत्ती एक थाली में रखकर ला सकता है। साथ ही रोली, अक्षत एवं फूल भी हों। यदि ऐसा संभव नहीं, तो आयोजन की विशालता के अनुरुप संख्या में दीपक एवं अगरबत्तियाँ मंच पर अथबा चौकियों-मेजों पर एक साथ सजाकर रखने की व्यवस्था की जा सकती है। उन्हें इस ढंग से सजाया जाए कि प्रज्वलित होने पर सब लोग उन्हें देख सके। [6] उचित संख्या में स्वयंसेवकों की संख्या के साथ सिंचन के लिए पात्र, रोली, अक्षत, पुष्प, कवावा आदि रखे जाएं। प्रारम्भ में कीर्तन या प्रज्ञा गीत के साथ वातावरण में शांति एवं सरसता उत्पन्न हो जाती है।

प्रेरणादायक टिप्पणियों, गीतों, क्रिया, निर्देशों के साथ दीपयज्ञ का सूक्ष्म कर्मकाण्ड प्रभावी ढंग से सम्पन्न किया जा सकता है। इसमें पवित्रिकरण, सूर्य ध्यान – प्राणायाम, तिलक, संकल्प सुत्र धारण व्यक्तित्व में पवित्रता के संचार से लेकर पा-

त्रता के संबर्धन की प्रखर प्रेरणा लिए हुए हैं। इसके साथ कलश स्थापना, गुरु वंदना, देव नमस्कार, पंचोपचार पूजन के साथ देवशक्तियों से जुड़ने का भाव बनता है, यज्ञ के उच्चस्तरीय प्र–योग के अनुरुप भाव भूमिका तथा वातावरण तैयार होता है। अग्नि स्थापन, गायत्री स्तवन के साथ दिव्य चेतना से जुड़ने का प्रगाढ़ और गहन प्रयोग सम्पन्न हो जाता है। फिर दीप यज्ञ में गायत्री महामन्त्र के उच्चारण के साथ दी गई आहूतियों एवं पू–र्णाहुति के साथ सामूहिक आध्यात्मिक प्रयोग की प्रचण्ड ऊर्जा पैदा होती है, जिसमें व्यक्तित्व के रुपाँतरण से लेकर सूक्ष्म वातावरण के परिष्कार के कार्य प्रभावी ढंग से सम्पन्न होते हैं। इसके साथ आरती और यज्ञ स्तुति आदि के साथ भक्तिभाव और परिपक्व होता है तथा अंत में युग निर्माण सत्संकल्प और जय घोष के साथ युग निर्माण के व्यक्ति, परिवार, समाज नि–र्माण के सुत्रों को हृदयगम करने का अवसर मिलता है और युग परिर्वतन का युग दर्शन सार रुप में आत्मसात होता है। विसर्जन एवं शांति पाठ के साथ दीप यज्ञ के महान प्रयोग से उत्पन्न ऊर्जा एवं प्रेरणा प्रवाह अंदर एवं बाहर स्थिर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं।

इस तरह मात्र दीपक और अग्रवती तथा कुछ पूजन सामग्री के साथ दीपयज्ञ सम्पन्न हो जाता है, इसमें समाज के किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग के लोगों को आने में संकोच नहीं होता। इस तरह लोक शिक्षण का महत कार्य सहज ही इनके माध्यम से सम्पन्न हो जाता है।

सरल एवं लोकप्रिय विधि के रुप में दीपयज्ञ

आश्चर्य नहीं कि अपनी सरलता एवं प्रभावशीलता के कारण दीप यज्ञ की प्रक्रिया दिनों–दिन लोकप्रिय होती जा रही है। दीप यज्ञ के माध्यम से धार्मिकता के प्रति जन आकर्षण और उत्साह का एक ऐसा प्रयोग बन पड़ा है, जो प्राचीन परम्परा के साथ समय की माँग को जोड़ कर चल रहा है। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि दीप यज्ञों का कृत्य बहुत सरल है, कम समय में पूरा हो जाता है और साथ ही इसका दृश्य–श्रव्य युक्त समूचा प्रशिक्षण कृत्य अपनी पावनता एवं प्रबल भाव प्रेरणआ के साथ लोक शिक्षण की आवश्यकता को पूरा करता है।

इसमें दीपक से लेकर अगरबती, षडकर्म से लेकर पूर्णा–हुति एवं देवदक्षिणा जैसे यज्ञीय कृत्य जीवन के गहरे दर्शन को समेटे हुए हैं, जिनको यदि भागीदारों में सही ढंग से प्रस्तुत किया जा सके, तो उनके माध्यम से व्यक्ति के कायाकल्प और आंतरिक रुपांतरण से लेकर वातावरण के परिष्कार का महत्त कार्य सम्पन्न हो सकता है।

दीपक की विशेषताएं

दीपक भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। ये प्रकाश चेतना, ज्ञान चेतना के प्रतीक हैं। इनके साथ श्रेष्ठ एवं पुण्य कार्यों के लिए आत्म–बलिदान की भावना जुड़ी हुई है। एक दीपक तिल–तिल जलकर प्रकाश विखेरता है। अंधेरे में राह को रोशन करता है और तेल व घी की अंतिम बूंद तक अंधकार से लड़ता है। वह स्वयं जलता है और दूसरों को रास्ता दिखाने का प्रबल पुरुषार्थ करता है। इसी आधार पर धार्मिक अनुष्ठा–नों में अखण्ड दीपक को जलाने की परम्परा रही है। अखण्ड ज्योति प्रकाश के प्रति, चैतन्य जीवन के प्रति अनन्य निष्ठा की प्रतीक के रुप में जलाई जाती रही है और हर कीमत पर इसकी इफाजत की जाती है।

दीपक अपनी विशेषताओं के कारण ध्यान साधना का भी एक माध्यम है। इसे जहाँ ज्ञान चेतना का प्रतीक माना जाता है, वहीं हृदय में अंगुष्ठ मात्र ज्योति के रुप में आत्मा का भी प्र–तीक प्रतिनिधि है। त्राटक साधना में दीपक को माध्यम बनाया जाता है। ईश्वर के ज्ञान एवं प्रकाश रुप के प्रतिनिधि के रुप में दीपक एक सार्थक एवं प्रभावशाली प्रतीक है। आचार्यश्री के शब्दों में, देवसंस्कृति की जननी गायत्री में भी यह विशेष–ताएं हैं। सद्ज्ञान–सदविवेक की स्थापना जन–जन में करने के लिए गायत्री महाशक्ति या उसके दृश्य प्रतीक दीपक को मा–ध्यम बनाया जाता है। जिनका आस्तिकता से सीधा सम्बन्ध नहीं, उन्हें भी इस आधार पर उच्च आदर्शों के साथ गहराई से जोड़ा जा सकता है। इस धारा को अपनाने वाला दीपक की तरह श्रद्धा का पात्र बनता है। जिस मनुष्य को देव जीवन तक पहुंचने की ललक हो तो उसे यही क्रम अपनाना पड़ता है। [7]

विश्व की सबसे बड़ी शक्ति सद्ज्ञान ही है। इसी से व्यक्ति समुन्नत बनता है। यही समाज और विश्व के सर्वतोमुखी वि–कास का आधार है। इसको विचार क्राँति का आधार समझा जा सकता है। और इस तरह दीपक को इसका प्रतीक मा–नते हुए इसके महत्व को हृदयंगम किया जा सकता है। समस्त समस्याओं का सुनिश्चित समाधान सद्ज्ञान पर आधारित है। दीपक को इसकी प्रतीक प्रेरणा के रुप में समझा जा सकता है। सूर्योदय की उपमा दीप प्रज्वलन से दी जा सकती है। दीपक में अग्नि की ऊर्जा आभा के रुप में प्रकाश फैलाने की परमार्थ परायणता होती है, जिसे उधर्वगामी और अद्म्य शक्ति से युक्त प्रवल चेतना से जोड़ा जा सकता है।

यज्ञ अग्नि की विशेषताएं

यज्ञ की अग्नि में प्रदूषण को दूर करने की सामर्थ्य होती है। दोष–दुर्गुणों के परित्याग में भी अग्नि को साक्षी किया जाता है। अग्नि कीट पतगों, कृमि कीड़ों, सीलन–सड़न आदि को नष्ट कर देती है। इस प्रकार यज्ञ को दुष्प्रवृत्तियों–दुर्भावनाओं के परित्याग के संकल्प के रुप में भी माध्यम बनाया जाता है।

अग्नि यज्ञ का केंद्रीय तत्व है, जो अजस्र प्रेरणाओं से भरा हुआ है। य़ज्ञीय प्रेरणाओं का महत्व समझाते हुए ऋग्वेद में यज्ञाग्नि को पुरोहित कहा गया है। उसकी शिक्षाओं पर चलकर लोक–परलोक दोनों सुधारे जा सकते हैं। [8] इसमें निहित शिक्षाएं इस प्रकार हैं [9]

1. जो कुछ बहुमूल्य पदार्थ अग्नि में हवन करते हैं, उसे वह अपने पास संग्रह नहीं रखती, वरन् सर्वसाधारण के उपयोग के लिए वायुमण्डल में बिखेर देती है।...इसी तरह हमारी शिक्षा, समृद्धि, प्रतिभा आदि विभूतियों का न्यूनतम उपयोग हमारे लिए और अधिकाधिक उपयोग जन–कल्याण के लिए होना चाहिए।

2. जो वस्तु अग्नि के सम्पर्क में आती है, उसे वह दुरदुराती नहीं, वरन् अपने में आत्मसात करके अपने समान ही बना लेती है। जो पिछड़े या छोटे या बिछुड़े व्यक्ति अपने सम्पर्क में आएं, उन्हें हम आत्मसात करने और समान बनाने का आदर्श पूरा करें।

3. अग्नि की लौ कितना ही दबाव पड़ने पर भी नीचे की ओर नहीं होती, वरन् ऊपर को ही रहती है। इसी तरह हम प्रलोभन, भय एवं विषम परिस्थितियों में अपने विचारों व कार्यों की अधोगति न होने दें व अपना संकल्प और मनोबल अग्निशिखा की तरह ऊँचा ही रखें।

4. अग्नि जब तक जीवित रहती है, ऊष्णता एवं प्रकाश की अपनी विशेषताएं नहीं छोड़ती। उसी प्रकार हमें जीवन भर पुरुषार्थी और कर्तव्यनिष्ठ बनकर, अपनी गतिशीलता की गर्मी और धर्म–परायणता की रोशनी घटने नहीं देना चाहिए।

5. यज्ञाग्नि का अवशेष भस्म मस्तक पर लगाते हुए हमें सीखना होता है कि मानव जीवन का अन्त मुट्ठीभर भस्म के रुप में शेष रह जाता है। अपने इस अन्त को ध्यान में रखते हुए जीवन के सदुपयोग का प्रयत्न करना चाहिए।

6. अपनी थोड़ी सी वस्तु को वायुरुप बनाकर उन्हें समस्त जड़–चेतन प्राणियों को बिना किसी अपने–पराये, मित्र–शत्रु का भेद किये गुप्तदान के रुप में खिला देना एक विलक्षण शिक्षण है, जो एक श्रेष्ठ ब्रह्मभोज का पुण्य प्रदान करता है।

वस्तुतः यज्ञ व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण की एक सशक्त विधा है, जिसके माध्यम से सुसंस्कारों की प्रतिष्ठापना होती है। यज्ञ अंतःकरण में श्रेष्ठ संस्कारों की स्थापना की एक सफल मनोवैज्ञानिक विधि है। [10]

यज्ञ से जुड़े लाभ

यज्ञ से जुड़े लाभ अनगिन हैं, इनके प्रत्यक्ष लाभों कुछ इस तरह से रेखांकित किया जा सकता है [11] – 1.स्वास्थ्य संरक्षण, रोग निवारण, 2. मानसिक स्वास्थ्य संतुलन और मेधा अभिवर्धन, 3. वायु प्रदूषण का निवारण, 4. वातावरण में देवत्व के पक्षधर उच्चस्तरीय तत्वों को बढ़ावा, 5. दैवी शक्तियों के अनुग्रह का बरसना, 6. विपत्तियों का निवारण, 7. सुविधा साधनों का परिपोषण, 8. प्राण तत्व की वर्षा से समूचे प्राणियों का हित, 9. वृक्ष वनस्पतियों में पोषण सामर्थ्य का बढ़ना, 10. परिस्थितियों का अनुकूलन होना।

लोक शिक्षण की प्रभावशाली विधा के रुप में यज्ञ

दीप यज्ञ के शुरु तथा अन्त में सम्पन्न होने वाले कृत्य ऐसे हैं, जिनका लोक शिक्षण के लिए परिपूर्ण प्रयोग किया जा सकता है। जनरूचि की धर्मधारणा को आदर्शवादिता की ओर मोड़ने में इसके दृश्य–श्रव्य आयोजनों का वातावरण अति प्रेरणाप्रद होता है। दीपक, सत्प्रवृति संबर्धन का प्रतीक, अगरबती या धूपवत्ती दुष्प्रवृति उन्मूलन का प्रतीक। यज्ञीय दिव्यता से ओत–प्रोत वातावरण में व्यक्ति निर्माण–आत्म परिष्कार, लोकमंगल के लिए किए गए देवदक्षिणा के संकल्प अपने आप में अनोखा प्रभाव पैदा करते हैं। कोर्ट में गंगा–जली छूना और भावना पूर्वक गंगाजल में खड़े होकर किए गए संकल्पों में जमीन आसमान का अंतर होता है। शिष्टाचार पूरा करते हुए वर वधु के हाथ मिला देना कुछ और है, तथा यज्ञ की साक्षी में एकात्म होने की प्रतिज्ञा कुछ और ही है। दीप यज्ञ के वातावरण में हर भागीदार अपने को देवत्व से ओत–प्रोत अनुभव करता है। उस स्थिति में व्यक्तिव निखारने की जो प्रखरता उभरती है, वह किसी और ढंग से उभरती नहीं देखी जाती।

पूर्णाहुति

पूर्णाहुति में प्रत्येक याजक भागीदार कम से कम एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई को अपनाने का संकल्प करता है। अन्तःकरण में ज्योति जागे बिना दीप यज्ञ की पूर्णाहुति नहीं होती। [12] इस तरह सत्प्रवृतियों के प्रकाश का प्रतीक दीपक और दूसरा अवांछनीयताओं का निरोधक, दुर्गन्धनिवारक अगरबती का प्रज्वलन – दोनों के मिलने से ही दीपयज्ञ बनता है। इसके साथ धर्म–धारण के अनेक रुप, आचार्यश्री के शब्दों में युगधर्म के रुप में उपयुक्त किए जा सकते हैं और दीपयज्ञ के माध्यम से इनको अपनाने व धारण करने की प्रेरणा उभारी जा सकती है, यथा – 1. श्रमशीलता, 2. सज्जनता, 3. मितव्ययिता, 4. स्वच्छता–सुव्यवस्था, 5. सहकारिता, 6. उदारता, 7. दूरदर्शिता–विवेकशीलता, 8. संयमशीलता, 9. समता, 10. साहसिकता। [13] इन्हें सत्य–प्रवृत्तियों के रुप में निरुपित करते हुए, प्रतिभागियों को अपनी क्षमता के अनुरुप देव दक्षिणा के रुप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। जो दीप–यज्ञ का रचनात्मक पक्ष है।

दूसरा पक्ष निषेधात्मक, दुष्प्रवृत्तियों के परित्याग करने को लेकर है, उपरोक्त धर्मधारणाओं के विपरित दुष्प्रवृतियों को छोड़ने के लिए उपस्थित प्रतिभागियों से अनुरोध किया जा सकता है। 1. आलस–प्रमाद, 2. दुष्टता–उच्छृंखलता, 3. फीजूलखर्ची, ठाट–बाट का प्रदर्शन, 4. अस्त–व्यस्तता, अव्यवस्था, मर्यादाओं की अवहेलना, 5. एकाकीपन, आपाधापी, स्वार्थपरता संकीर्णता, 6. निष्ठुरता, कृपणता, शोषण–तृष्णा, उद्धत महत्वाकांक्षा, 7. तात्कालिक लाभ के लिए भविष्य को अंधकारमय बनाना, अनाचार करना और कुकर्म

करना, 8. वासना, तृष्णा और अहंता को छूट देकर लिप्सा–लालसा के लिए कुछ भी कर डालने के लिए उद्त हो जाना, 9. विषमता, लिंगभेद, जाति भेद, वर्ग भेद के आधार पर विषमता उत्पन्न करना, आर्थिक असमानता के विष बीज बोना, 10. भीरुता, कायरता, अनीति सहना और गई गुजरी स्थिति से उबरने के लिए पुरुषार्थ से कतराना।

विचार क्राँति के बीज

इस प्रकार छोटे बड़े सभी दीप यज्ञ प्रखर प्रेरणा प्रवाह के साथ सम्पन्न होते हैं, जिनमें कर्म के साथ ज्ञान जुड़ा रहता है। अतः इन्हें दीप यज्ञ ही नहीं, ज्ञान यज्ञ भी कहा जा सकता है, जिसमें युगऋषि के शब्दों में विचार–क्राँति के बीज निहित हैं। इस तरह यज्ञ एक समग्र जीवन दर्शन है, जिसमें व्यक्तित्व के रुपाँतरण का गहरा मनो–आध्यात्मिक विज्ञान निहित है, व्यक्ति के लौकिक उत्कर्ष एवं आध्यात्मिक विकास का विधान विद्यमान है। साथ ही इसमें परिवार, समाज, प्रकृति–पर्यावरण, सकल सृष्टि एवं समष्टि का कल्याण निहित है। [14]

दीप यज्ञ में निहित विचार क्राँति के बीजों के माध्यम से नैतिक काँति, बौद्धिक क्राँति और सामाजिक क्राँति संभव है। इस क्राँति की समग्रता नैतिक काँति, बौद्धिक क्राँति और सामाजिक क्राँति के तीनों क्षेत्रों को पूरा करने में है। इनको पूरा किए बिना अन्य क्षेत्रों (आर्थिक, राजनैतिक आदि) के परिवर्तन अधूरे ही रहेंगे। इस अधूरेपन को पूरा करने के लिए ही दीप यज्ञों की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है।

यह नव युग की आरती उतारने जैसा है, समग्र परिवर्तन की आधारभूमि तैयार करने जैसा है, जिससे स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की सरंचना साकार हो सके। दीप यज्ञों की श्रृंखला गतिशील होते ही व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के तीनों महान निर्धारण, क्षमता एवं परिस्थिति के अनुसार सर्वत्र चल पड़ेंगे। उनकी प्रगति नवयुग की आधारशिला बनेगी। संक्षेप में दीपयज्ञों को सनातन धार्मिक प्रयोगों का एक युगानुरुप अद्भुत संस्करण कहा जा सकता है। परिवार में संस्कार सद्गुण उभारने और पारिवारिक बुराईयों के परिमार्जन के सुत्र इसमें विद्यामान हैं।

समाज निर्माण के लिए वातावरण

समाज निर्माण के लिए वातावरण दीप यज्ञों के माध्यम से तैयार किया जा सकता है। आज भी अनेकों अवांछनीयताएं समाज में ज़ड जमाए हुए हैं। अभी भी हम ऐसे प्रथा–प्रचलनों के जंजाल में फंसे हुए हैं, जिनसे मात्र हानियाँ ही उठानी पड़ रही हैं। जन्म–जाति के आधार पर ऊँच–नीच का भेद, खर्चीली शादियाँ, जेवर–दहेज के प्रति किया जाने वाला आग्रह, बाल विवाह, भिक्षा व्यवसाय, मृतकभोज, भाग्यवाद जैसी अनेकों कुप्रथाएं हैं, जो उसे खोखला कर रही हैं। प्रज्ञा गीतों के साथ दीपयज्ञ का प्रेरणा प्रवाह इनके विरुद्ध उभारा जा सकता है।

आचार्यजी के शब्दों में, दीप यज्ञ मात्र कर्मकाण्ड नहीं हैं। इसका मूलभूत उद्देश्य सार्वभौम एकता और समता है। साम्यवादियों द्वारा मजदूरों और गरीबों को एक हो जाने की आवाज उठाई गयी है। दीपयज्ञों द्वारा संसार के सभी विचारशीलों और भावनाशीलों को एकत्रित और संगठित होने के लिए कहा जा रहा है, ताकि दुष्प्रवृत्तियों के, कुप्रचलनों के विरोध में जिहाद बोला जा सके और उस नवयुग की स्थापना हो सके, जिसे कभी सतयुग के नाम से पुकारा जाता था। जिससे मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण दृष्टिगोचर हो सके। [15]

दीपयज्ञ मात्र लोक शिक्षण नहीं, इससे आगे

दीपयज्ञ के माध्यम से सृजन संगठन खड़ा किया जा सकता है, जहाँ अंश दान व समय दान की व्यवस्था सुचारु करते हुए सृजन प्रयोजनों की विधि व्यवस्था खड़ी की जा सके, जिससे विचार क्राँति अभियान को युग परिवर्तन लक्ष्य के लिए कार्यान्वयन किया जा सके। जिसके माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, कुरीति उन्मूलन, नशा निषेध, हरितिमा संबर्धन, सादा जीवन उच्च विचार, अल्प वचत जैसी सत्प्रवृति संबर्धन की योजनाओं को क्रियान्वित किया जा सके। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक सुधार परिवर्तन के लिए आवश्यक उत्तेजना के सरंजाम जुटाए जा सके।

इन छोटे आयोजनों को संगठन की, परिष्कार की, परिवर्तन की, नव निर्माण की भूमिका समझा जा सकता है। ऐसा माहौल तैयार किया जा सकता है जहां अंधकार से विरत होने और प्रकाश पथ पर चल पड़ने का हर किसी को अवसर मिल सके। इस तरह दीप यज्ञ एक प्रकार का वीजारोपण है, जिसका अंकुर फूटकर नए पौधे का रुप लेते हुए अंतत विशाल वृक्ष के स्तर तक पहुंचकर फल फूलों से लद सके। इसकी कल्पना, संभावना, प्रतिक्रिया का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। वह दिन दूर नहीं जब इसका प्रतिफल धन–धान्य से भरी पूरी फसल के रुप में सामने आए। इसके साथ बिखराव को एकता, समता और सशक्तता के रुप में विकसित होते देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय संदर्भ में दीप यज्ञ

दीप यज्ञों के बड़े आयोजन के साथ राष्ट्रीय एकता सम्मेलन नाम भी जुड़ जाता है। यह एकता अनेकतावादियों, अलगाववादियों के सम्बन्ध में ही विचार प्रेरणा नहीं देती, वरन् उसका आधार शाश्वत है। क्षेत्रीय समस्याएं तो उठती और समाप्त होती रहती हैं, पर व्यापक क्षेत्र में फैली हुई विलगाव की, अलगाव की, विभिन्नता और विषमता की दुष्प्रवृत्तियाँ ऐसी हैं, जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती हैं। फूट के बीज बोती हैं, विष वृक्ष बनती और अनेकानेक दुष्परिणाम उत्पन्न करती हैं। ऐसी विषमताओं में क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, संग्रहवाद प्रमुख

हैं। समता और एकता इन्हीं प्रमुख कारणों से क्षतिग्रस्त हुई है। इनमें सभी को निरस्त करने के लिए हर किसी को सदा सर्वदा के लिए सहमत किया जाना चाहिए। आर्थिक विषमता इन सबसे ऊपर है। गरीबी और अमीरी दोनों को ही अभिशाप समझा जाना चाहिए। औसत सतर का निर्वाह अपनाने के लिए हर किसी को मानस बनाना चाहिए। अधिक उपार्जित किया जा सकता है, पर उसे नीच वासना, तृष्णा, अहंता की पूर्ति में नहीं, वरन् पुण्य प्रयोजनों में ही नियोजित किया जाना चाहिए। सर्वतोमुखी एकता समता के लिए उपरोक्त सभी क्षेत्रों में समता प्रतिष्ठित की जानी चाहिए। दीप यज्ञों की पृष्ठभूमि में यह तथ्य भी समाहित है। [16]

केस स्टडीज

देश विदेश, गाँव शहर तथा महानगरों में समय-समय पर सम्पन्न दीपयज्ञों में उपर वर्णित परिकल्पनाओं को साकार होते देखा जा सकता हैं। विदेशों में गायत्री शक्तिपीठों एवं प्रज्ञा केंद्रों तथा विदेशियों के बीच यदा-कदा दीपयज्ञ सम्पन्न होते रहते हैं। इसी वर्ष 2024 के प्रथम दिन गायत्री परिवार युग निर्माण टोरंटो में दीपयज्ञ के माध्यम से नववर्ष 2024 का भव्य स्वागत किया। 300 से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया, जिसमें अधिकतर युवाओं और बच्चों ने कार्यक्रमों का संचालन किया।[17] दिया मुम्बई ने अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस 2022 पर केईएम नर्सिंग कॉलेज में दीप यज्ञ के साथ कोरोना योद्धाओं एवं कोरोना से दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना की। साथ ही प्रसाद रुप में पूज्य गुरुदेव के साहित्य का वितरण किया। [18]

भारत की धार्मिक-आध्यात्मिक राजधानी वाराणसी में दीपयज्ञ के माध्यम से विभिन्न धर्म एवं वर्ग के लोगों को एकत्र कर सूर्याध्यदान करना दीपयज्ञ की सर्वग्राह्यता का एक वेमिसाल उदाहरण है। 7 मई, 2022 की पूर्व संध्या पर दीपयज्ञ हुआ, जिसमें महानगर के सभी वर्ग के नागरिकों ने भाग लिया। अगले दिन बनारस के 107 घाटों पर एक साथ 25,000 लोगों ने मानव श्रृंखला बनाकर संध्यावंदन करते हुए भगवान भास्कर को अर्ध्य दिया। गायत्री महामंत्र के साथ सूर्याध्यादान किया, जो मदनमोहन मालवीयजी की इच्छा थी कि काशी के घाटों पर दस सहस्त्र युवा एक साथ गायत्री महामन्त्र के संग संध्या वंदन करते हुए उदीयमान सूर्य भगवान को अर्ध्य दें। [19]

काशी के चौसठी घाट एवं राणा महल घाट पर मुस्लिम समाज के लगभग 200 लोगों ने सामूहिक सूर्य अर्ध्यदान के कार्यक्रम में भाग लेते हुए साम्प्रदायिक एकता और परस्पर सौहार्द्र को बल दिया। [20] पाण्डेय घाट पर काशी बंगीय समाज, राम घाट एवं मेहता घाट पर काशी गुजराती समाज से मुलाकात हुई। काशी महाराष्ट्रीय समाज, नाविक समाज, काशी विश्वनार्थ दल, हिंदु युवा वाहिनी, देव दीपावली एवं गंगा आरती सहित अनेक धार्मिक-सामजिक संस्थाओं की काशी के घाटों पर भागीदारी रही। [21]

राजघाट पर पूर्व संध्या पर विराट जनजागरण दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ था। जिसमें संवोधित करते हुए देवसंस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा था कि आज जब सारा विश्व युद्ध एवं आतंक की समस्या से जूझ रहा है, व्यक्ति, परिवार एवं समाज तीनों स्तर पर मानसिक विसंगतियों ने मनुष्य के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं, जिनसे उबरने के लिए एक सशक्त विचार क्राँति की आवश्यकता है। [22] मालूम हो कि इसके ही पूर्व पिछले दिनों वहाँ मंदिर-मस्जिद के विवाद को लेकर साम्प्रदायिक तनाव का माहौल था। जबकि दीपयज्ञ के साथ सम्पन्न साम्प्रादियक सौहार्द्य की मिसाल को जी न्यूज से लेकर आजतक जैसे विभिन्न चैनलों ने प्रमुखता से कवर किया।

इसी तरह उज्जैन में सिक्ख धर्म के सस्थापक श्री गुरु-नानक देवजी के 551वें प्रकाशोत्सव पर उज्जैन शाखा ने बड़े दिव्य वातावरण मे दीपांजलि कार्यक्रम आयोजित किए और घर-घर दीपक जलाए। ज्ञानखेडा क्षेत्र के दश्मेश गुरुद्वारा में भी शांतिकुंज से प्रसारित दीपयज्ञ के साथ दीपांजलि का कार्य़क्रम आयोजित किया गया। परस्पर सद्भाव बढ़ाने के प्रयासों से यहाँ के सिक्ख परिजन गद्गद थे। [23] झारखण्ड के टाटानगर शक्तिपीठ में दीपयज्ञ आयोजन होते रहते हैं, जिनमें हिदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई समुदायों के लोग भाग लेते हैं और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में रहते हैं। 7 जनवरी 2024 को सभी समुदाय के लगभग पाँच सौ लोगों ने दीपयज्ञ में भाग लिया। इसी तरह अब तक हुए सम्पन्न 46 विराट अश्वमेध यज्ञों में दीपयज्ञ के विशाल आयोजन देश से लेकर विदेश की धरती पर अद्भुत सकारात्मक परिणामों के साथ सम्पन्न होते रहे हैं।

इस तरह दीपयज्ञ के माध्यम से व्यक्ति, परिवार औऱ समाज के नव निर्माण की दिशाधारा कार्यान्वित की जा सकती है। इसके माध्यम से शाश्वत धर्म तत्व का इन सभी क्षेत्रों में प्रवेश का प्रयास है, जिसका समूची मानव जाति के साथ अविच्छिन्न सम्बन्ध जुड़ता है। दीपयज्ञों का प्रमुख उद्देश्य सुविस्तृत समर्थ धर्मतन्त्र को रचनात्मक प्रयोजनों के लिए मोड़ देना है। धर्मतंत्र के साथ प्रबुद्ध वर्ग को जोड़ने की प्रक्रिया है। धर्मधारणा के तत्वज्ञान, महात्म्य और सत्परिणाम को जनमानस में उतारना है और धर्मक्षेत्र को पुनर्जीवित करते हुए, इसे जीवंत जाग्रत कर विचारक्राँति के महत्त उद्देश्य को पूर्ण करना है।

निसंदेह रुप में, दीपयज्ञों के माध्यम से नवनिर्माण के लिए वातावरण बनता है। आचार्यश्री के शब्दों में, दीपयज्ञों का प्राथमिक उद्देश्य नवनिर्माण के लिए वातावरण गरमाने का है। वह तत्परता पूर्वक किया जाए, पर साथ ही यह भी समझा जाए कि यह शुरुआत है, अन्त नहीं। पूर्णता तो तब आएगी, जब आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्शों को व्यवहार में उतारने वाली बात बन सके। एकता और समता का सुनिश्चित वातावरण बन सके। इसी लक्ष्य तक पहुँचने पहुँचाने के लिए दीप यज्ञों के माध्यम से शुभारम्भ श्रीगणेश एवं मंगलाचरण किया जा रहा है। आशा की जानी चाहिए कि इन प्रयासों से प्रभावित व्यक्ति समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी

से भरी–पूरी विचारणा और गतिविधियाँ अपना सकेंगे। धरती पर स्वर्ग के अवतरण वाला स्वप्न साकार हो सकेगा। [24]

निष्कर्ष

दीप यज्ञ भारतीय समाज में न केवल धार्मिक विधि का एक साधन है, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। पारंपरिक यज्ञों की जटिलता और उनके आयोजन की कठिनाइयों को देखते हुए, युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने एक सरल और सुलभ विधि के रूप में दीप यज्ञ की अवधारणा प्रस्तुत की। दीप यज्ञ में समाज के सभी वर्गों को शामिल करने की क्षमता है, चाहे वह किसी भी धर्म जाति, या समुदाय से हो।

दीपक और अगरबत्ती, जो दीप यज्ञ के प्रमुख प्रतीक हैं, आत्म–बलिदान, प्रकाश और सद्ज्ञान के प्रतीक हैं। दीपक अंधकार को दूर करता है और रोशनी फैलाता है, जो ज्ञान और चेतना का प्रतीक है। अगरबत्ती दुष्प्रवृत्तियों को दूर करती है और वातावरण को सुगंधित बनाती है, जो कि सकारात्मकता और शुद्धता का प्रतीक है।

दीप यज्ञ के माध्यम से समाज में नैतिकता, बौद्धिकता और सामाजिकता के मूल्यों का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। यह व्यक्ति के आत्मिक और मानसिक विकास में सहायक है और समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दीप यज्ञ के आयोजन से समाज में एकता, समता और सद्भावना को बढ़ावा मिलता है, जो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार, दीप यज्ञ भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और समाज के हर वर्ग को जोड़ने, नैतिक मू–ल्यों का प्रचार करने, और एक सकारात्मक और समृद्ध समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यज्ञ के माध्यम से प्राप्त ऊर्जा और प्रेरणा समाज के हर स्तर पर सुधार और विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] सिंह, डॉ. सुखनन्दन. वैदिक संस्कृति में यज्ञ – एक समग्र जीवन दर्शन एवं साधना पथ. इंटरडिस्पिलनरी जर्नल ऑफ यज्ञ रिसर्च. 2019; पृ. 1–6।

[2] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 5।

[3] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 5।

[4] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 5।

[5] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 6–7।

[6] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 7।

[7] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. युग यज्ञ पद्धति. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 4।

[8] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 18।

[9] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. कर्मकाण्ड भास्कर. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 2010; पृ. 28।

[10] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. कर्मकाण्ड भास्कर. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 2010; पृ. 28–29।

[11] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. यज्ञ विश्व का सर्वोत्कृष्ट दर्शन. अखण्ड ज्योति. 1991; 44(9): 47–48।

[12] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 21।

[13] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 24।

[14] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 29।

[15] सिंह, सुखनन्दन. वैदिक संस्कृति में यज्ञ – एक सम–ग्र जीवन दर्शन एवं साधना पथ. इंटरडिस्पिलनरी जर्नल ऑफ यज्ञ रिसर्च, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय. 2019; पृ. 1–6।

[16] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 13–14।

[17] आचार्य़, पं. श्रीराम शर्मा. विचार क्राँति के दीप यज्ञ. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा. 1991; पृ. 16।

[18] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2024, फरवरी 5. पृ।

[19] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2022, जून 16. पृ. 3।

[20] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2022, जून 1. पृ. 3।

[21] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2022, जून 1. पृ. 3।

[22] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2022, जून 1. पृ. 3।

[23] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज हरिद्वार. 2022, जून 1. पृ. 3।

[24] प्रज्ञा अभियान. शांतिकुंज, हरिद्वार. 2021, जनवरी 1. पृ. 6।